माँ

प्यारा सा बच्चा

गोद में भर लेती है बच्चे को

चेहरे पर नजर न लगे

माथे पर काजल का टीका लगाती है

कोई बुरी आत्मा न छू सके

बाँहों में ताबीज बाँध देती हैं

बच्चा स्कूल जाने लगा है

सुबह से ही माँ जुट जाती है

चौके–बर्तन में

कहीं बेटा भूखा न चला जायें

लड़कर आता है पड़ोसियों के बच्चों से

माँ के आँचल में छुप जाता है

अब उसे कुछ नहीं हो सकतां

बच्चा बड़ा होता जाता है

माँ मन्नतें माँगती है

देवी–देवताओं से

बेटे के सुनहरे भविश्य की खातिर

बेटा कामयाबी पाता है

माँ भर लेती है उसे बाँहों में

अब बेटा नजरों से दूर हो जायेगां

फिर एक दिन आता है

षहनाईयाँ गूँज उठती हैं

माँ के कदम आज जमीं पर नहीं

कभी इधर दौड़ती है, कभी उधर

बहू के कदमों का इंतजार है उसे

आषीर्वाद देती है दोनों को

एक नई जिन्दगी की षुरुआत के लिएं

माँ सिखाती है बहू को

परिवार की परम्परायें व संस्कार

बेटे का हाथ बहू के हाथों में रख

बोलती है

बहुत नाजों से पाला है इसे

अब तुम्हें ही देखना हैं

माँ की खुषी भरी आँखों से

आँसू की एक गरम बूँद

गिरती है बहू की हथेली परं

कृश्ण कुमार यादव